Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

समकालीन उच्च शिक्षा और भारतीय ज्ञान प्रणाली : एकीकरण के मार्ग और चुनौतियाँ

[1]अनुष्का पटेल, [2]डॉ. ज़ायरा जैदी
[1]शोधकर्त्री, [2]सह-आचार्या
[1] लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश , [2] आर्य कन्या महाविद्यालय, हरदोई, उत्तर प्रदेश

सारांश

भारत में उच्च शिक्षा का रूपांतरण स्वदेशी ज्ञान परंपराओं को आधुनिक अकादमिक ढाँचों के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता से प्रेरित हुआ है। दीर्घकाल से बौद्धिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक विकास पर आधारित भारतीय ज्ञान प्रणाली एक समग्र प्रतिमान प्रस्तुत करती है जो समकालीन वैश्विक शिक्षा की पूरक है। प्रस्तुत अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में, भारतीय ज्ञान प्रणाली को उच्च शिक्षा में एकीकृत करने से संबंधित मार्गों और चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। गुणात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए, प्रस्तुत अध्ययन में अंतर्विषयक पाठ्यक्रम निर्माण, भाषा समावेशन और संकाय विकास जैसी रणनीतियों का पता लगाने के लिए मौजूदा साहित्य का संश्लेषण किया गया है। इसमें संस्थागत प्रतिरोध, ज्ञानमीमांसा संबंधी संघर्ष और पश्चिमी प्रतिमानों के प्रभुत्व सहित प्रमुख बाधाओं को भी उजागर किया गया है। निष्कर्ष से पता चलता है कि यद्यपि भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण में सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी शिक्षा के निर्माण की परिवर्तनकारी क्षमता है, किन्तु इसकी सफलता व्यवस्थित नीति कार्यान्वयन, अकादमिक पुनर्गठन और सहयोगात्मक जुड़ाव पर निर्भर करती है। अध्ययन से पता चलता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण शिक्षा के विऔपनिवेशीकरण और अधिक समावेशी ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

मुख्य बिंदु : भारतीय ज्ञान प्रणाली, उच्च शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पाठ्यक्रम एकीकरण, विऔपनिवेशीकरण, अंतःविषयक अधिगम, शैक्षिक सुधार।

परिचय

भारत में समकालीन उच्च शिक्षा का परिदृश्य पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का एक जटिल अंतर्संबंध है। जैसे-जैसे संस्थान स्वदेशी ज्ञान को वैश्विक शैक्षिक प्रतिमानों के

साथ एकीकृत करने का प्रयास करते हैं, वैसे ही महत्वपूर्ण अवसर और चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस एकीकरण के लिए उत्प्रेरक का काम किया है, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को प्रतिबिंबित करने वाले पाठ्यक्रम को बढ़ावा देती है और साथ ही समकालीन शैक्षिक आवश्यकताओं को भी पूरा करती है। इस गतिशील प्रक्रिया को लेख द्वारा प्रदान किए गए विषयगत अन्वेषण में और अधिक बल दिया गया है, जो इस विकसित होते ढांचे के भीतर चुनौतियों और अवसरों पर विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस विमर्श में प्रत्येक योगदान भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक संदर्भ और वर्तमान बाधाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है, और नीति निर्माताओं से इन जटिलताओं को प्रभावी ढंग से संभालने का आग्रह करता है (डॉ. सुचित्रा ए. नाइक और अन्य, 2020) (डॉ. सिंह एस.के, 2019)।

भारतीय ज्ञान प्रणाली

भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत में हजारों वर्षों में विकसित ज्ञान के समृद्ध और विविध भंडार को संदर्भित करती है, जो दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, गणित, कला, कृषि और शासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में फैला हुआ है। यह प्राचीन ग्रंथों, परंपराओं और प्रथाओं में निहित है और जीवन, प्रकृति और समाज को समझने के लिए एक समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं है अपितु यह व्यावहारिक अनुभव, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि को समाहित करती है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद (पारंपरिक चिकित्सा), योग (शारीरिक और मानसिक कल्याण) और शास्त्रीय भारतीय गणित जैसी प्रणालियाँ दर्शाती हैं कि मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए ज्ञान का उपयोग कैसे किया गया।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता इसका समग्र दृष्टिकोण है, जहाँ ज्ञान को कठोर विषयों में विभाजित करने के बजाय परस्पर जुड़ा हुआ माना जाता है। यह व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन पर बल देती है, और स्थिरता, सद्भाव और नैतिक जीवन को बढ़ावा देती है। कई आधुनिक प्रणालियों के विपरीत, जो मुख्य रूप से अनुभवजन्य और विशिष्ट ज्ञान पर केंद्रित होती हैं, भारतीय ज्ञान प्रणाली विज्ञान, दर्शन और मूल्यों को एक एकीकृत ढांचे में समाहित करती है।

कुल मिलाकर, भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान के प्रति एक व्यापक और मूल्य-आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो समकालीन शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रासंगिक और टिकाऊ बनाकर उसे समृद्ध कर सकती है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा शुरू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक समग्र, बहुविषयक दृष्टिकोण पर बल देती है और सांस्कृतिक जुड़ाव और वैश्विक प्रासंगिकता को बढ़ावा देने के लिए उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण की स्पष्ट रूप से वकालत करती है।

सम्बंधित साहित्य समीक्षा

उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण पर हाल ही में हुए शोधों में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है, विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद। निम्नलिखित अध्ययनों में प्रमुख विकास, दृष्टिकोण और चुनौतियों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

राजपूत और अन्य (2025) ने अपने अध्ययन में सर्वेक्षण-आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण का विश्लेषण किया और पाया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा में गुणवत्ता, समानता और सुलभता में सुधार लाने के उद्देश्य से एक व्यापक ढांचा प्रदान करती है। उन्होंने ने अध्ययन में इस बात पर जोर दिया कि जागरूकता और संस्थागत तत्परता उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के सफल कार्यान्वयन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं।

शाह (2026) ने अपने अध्ययन में उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को मुख्यधारा में लाने वाले परिवर्तनकारी दृष्टिकोणों का पता लगाया और यह निष्कर्ष निकाला कि पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण समग्र विकास, नैतिक मूल्यों और सतत सोच को बढ़ावा दे सकता है। अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली समकालीन सामाजिक चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान प्रदान करती है और बहुविषयक शिक्षा के राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दृष्टिकोण के साथ अच्छी तरह से मेल खाती है।

थपलियाल (2023) ने अपने अध्ययन में भारतीय ज्ञान प्रणाली के लिए एक संरचित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम मॉडल प्रस्तावित किया, जिसमें विश्वविद्यालयों में मानकीकृत पाठ्यक्रम ढाँचों की आवश्यकता पर जोर दिया गया। इन्होंने अध्ययन में बताया कि यद्यपि संस्थानों ने भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित कार्यक्रम शुरू कर दिए हैं, फिर भी पाठ्यक्रम के डिज़ाइन और कार्यान्वयन में असंगति है, जिसके लिए यूजीसी दिशानिर्देशों के माध्यम से नियामक संरेखण की आवश्यकता है।

त्रिपाठी और अन्य (2024) ने अपने अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत उच्च शिक्षा में पारंपरिक भारतीय ज्ञान की भूमिका का विश्लेषण किया और तर्क दिया कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करने से आलोचनात्मक सोच में वृद्धि होती है।

स्वैन और पांडे (2025) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कारण उच्च शिक्षा में ज्ञानमीमांसा संबंधी परिवर्तनों का अध्ययन किया और पाया कि यह नीति औपनिवेशिक और खंडित ज्ञान संरचनाओं से हटकर अधिक समावेशी और बहुविषयक दृष्टिकोण की ओर अग्रसर है। अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि एक बहुलवादी और शिक्षार्थी-केंद्रित शैक्षणिक वातावरण बनाने के लिए स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण आवश्यक है।

दास और बिस्वास (2025) ने अपने अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रटने की पद्धतियों को प्रतिस्थापित करते हुए अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षण को प्रोत्साहित करती है। उनके द्वारा किये गये अध्ययन से पता चलता है कि इस प्रकार के सुधार उच्च

शिक्षा में प्रासंगिक और व्यावहारिक ज्ञान ढाँचों को बढ़ावा देकर स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के समावेशन का समर्थन करते हैं।

निष्कर्षतः हाल के अध्ययनों से यह पता चलता है कि यद्यपि नीतिगत ढाँचे भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण का दृढ़ता से समर्थन करते हैं, फिर भी मानकीकरण की कमी, संकाय की तैयारी और संस्थागत प्रतिरोध जैसी चुनौतियाँ इसके प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालती रहती हैं। हालाँकि, इस बात पर स्पष्ट सहमति है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण उच्च शिक्षा को अधिक समावेशी, अंतःविषयक और सांस्कृतिक रूप से आधारित बनाकर उसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करने की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए वर्तमान अध्ययन आवश्यक है। मजबूत नीतिगत समर्थन के बावजूद, विभिन्न संस्थानों में सैद्धांतिक ढांचों और व्यावहारिक कार्यान्वयन के बीच अंतर बना हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करने के प्रमुख मार्गों और चुनौतियों पर प्रकाश डालने का प्रयास करेगा, जिससे अधिक सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक, अंतःविषयक और समग्र शिक्षा प्रणाली के विकास में योगदान मिलेगा। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षकों और संस्थानों को पाठ्यक्रम को सुदृढ़ बनाने, स्वदेशी ज्ञान को बढ़ावा देने और भारतीय उच्च शिक्षा की वैश्विक प्रासंगिकता को बढ़ाने के लिए अंतर्दृष्टि भी प्रदान करेगा।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अध्ययन का उद्देश्य

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में समकालीन उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण का विश्लेषण करना।
2. आधुनिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने से जुड़ी प्रमुख चुनौतियों और रास्तों का विश्लेषण करना।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में आधिकारिक नीति दस्तावेजों और अकादमिक साहित्य से प्राप्त माध्यमिक आंकड़ों पर आधारित गुणात्मक और विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया है।

डेटा स्रोत:

प्रस्तुत अध्ययन में डेटा स्त्रोत के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पाठ्यक्रम और भारतीय ज्ञान प्रणाली एकीकरण संबंधी दिशानिर्देश,

शिक्षा मंत्रालय के भारतीय ज्ञान प्रणालियों संबंधी दस्तावेज, सहकर्मी-समीक्षित जर्नल लेख और शोध पत्रों को शामिल किया गया है।

अध्ययन की प्रकृति:

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जो नीतिगत व्याख्या और अकादमिक विमर्श पर केंद्रित है।

विश्लेष्णात्मक चर्चा

समकालीन उच्च शिक्षा और भारतीय ज्ञान प्रणाली का अवलोकन

भारत में समकालीन उच्च शिक्षा का परिदृश्य उन नीतियों द्वारा संचालित एक महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजर रहा है जिनका उद्देश्य पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शैक्षणिक ढाँचों के साथ मिलाना है। इस परिवर्तन का केंद्र बिंदु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 है, जो शिक्षा के प्रतिमान में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेश पर जोर देती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली, जो विज्ञान, दर्शन और कला जैसे विभिन्न क्षेत्रों में फैले स्वदेशी ज्ञान का भंडार है, वह सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐसे पाठ्यक्रम की परिकल्पना करती है जो इस विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देता है, साथ ही अकादमिक विमर्श में पश्चिमी विचारों के ऐतिहासिक प्रभुत्व को भी संबोधित करता है। इसके अतिरिक्त, नीति शिक्षा को विऔपनिवेशीकरण करने और अंतःविषयक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर देती है, साथ ही भारतीय ज्ञान प्रणाली को उच्च शिक्षा में एकीकृत करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है, जबकि इससे जुड़ी चुनौतियों और अवसरों का भी समाधान करती है (शर्मा आर और अन्य, 2025) (ए के राउत और अन्य, 2025)।

एकीकरण के मार्ग

समकालीन उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण रोमांचक अवसरों के साथ-साथ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी उजागर करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यक्त किया गया है कि, शिक्षा संस्थानों के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना अत्यंत आवश्यक है ताकि एक ऐसा शिक्षण वातावरण विकसित किया जा सके जो भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत का सम्मान करते हुए शिक्षार्थियों को वैश्वीकृत दुनिया के लिए तैयार करे (शर्मा आर और अन्य, 2025)। इस पहल के लिए नवीन शिक्षण पद्धतियों की आवश्यकता है जो अंतःविषयक अध्ययन को अपनाती हैं, जिससे छात्रों को ज्ञान के विविध रूपों से जुड़ने का अवसर प्राप्त होता है और साथ ही आलोचनात्मक सोच और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को बढ़ावा मिलता है (यादव पी और अन्य, 2025)। हालांकि, मानकीकृत पाठ्यक्रम का अभाव एक महत्वपूर्ण बाधा है, जिसके कारण विभिन्न संस्थानों में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने के तरीके में असंगति पाई जाती है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए, एक व्यापक ढांचा आवश्यक

है जो शिक्षकों, नीति निर्माताओं और पारंपरिक ज्ञान संरक्षकों के बीच सहयोग का समर्थन करता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को केवल जोड़ा न जाए बल्कि प्रभावी रूप से शैक्षिक ताने-बाने में एकीकृत किया जाए।

○ आधुनिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान को शामिल करने के तरीके और रणनीतियाँ

भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए ऐसी रणनीतिक विधियों की आवश्यकता है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लिखित परिवर्तनकारी लक्ष्यों के अनुरूप हों। एक प्रभावी तरीका अंतःविषयक पाठ्यक्रमों का विकास है जो भारतीय ज्ञान प्रणाली को विज्ञान, कला और प्रौद्योगिकी जैसे विषयों में समाहित करते हैं, जिससे एक समग्र शैक्षिक अनुभव को बढ़ावा मिलता है। ऐसा एकीकरण न केवल सांस्कृतिक प्रासंगिकता को बढ़ाता है बल्कि उच्च शिक्षा में प्रचलित पश्चिमी-केंद्रित धारणाओं को भी चुनौती देता है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में बढ़ावा देने से पारंपरिक ज्ञान के साथ गहन जुड़ाव को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे शिक्षार्थी भारतीय ज्ञान प्रणाली के दार्शनिक आधारों को समझ सकें। साथ ही, इस पर केंद्रित संकाय विकास कार्यक्रम शिक्षकों को इस ढांचे के भीतर आत्मविश्वास से पढ़ाने और शोध करने में सक्षम बना सकते हैं, जिससे समकालीन चर्चा में इसकी वैधता और महत्व को बल मिलता है (शर्मा आर और अन्य, 2025)। इन रणनीतियों के माध्यम से, भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक पाठ्यक्रम को समृद्ध कर सकता है, जो शैक्षिक सुधार और सांस्कृतिक संरक्षण दोनों को संबोधित करता है (ए के राउत और अन्य, 2025)।

एकीकरण प्रक्रिया में चुनौतियाँ

समकालीन उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण में कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं जो इसके प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालती हैं। एक प्रमुख बाधा पश्चिमी शैक्षिक प्रतिमानों का प्रभुत्व है, जो अक्सर स्थानीय ज्ञान और पद्धतियों को दबा देते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के शैक्षिक ढांचे में भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः स्थापित करने के उद्देश्य से एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रस्तावित करती है। हालाँकि, स्थापित अकादमिक परंपराओं के प्रतिरोध और इसके बारे में जागरूकता की कमी इस पहल में बाधा डाल सकती है। इसके अलावा, इसके सफल एकीकरण के लिए अंतःविषयक सहयोग और पाठ्यक्रम के विऔपनिवेशीकरण की आवश्यकता है, फिर भी इन बदलावों को अक्सर संस्थागत जड़ता और परिवर्तन को अपनाने में अनिच्छा का सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में, अधिक समावेशी और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने से उत्पन्न अवसरों और चुनौतियों दोनों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना आवश्यक है (शर्मा आर और अन्य, 2025)(ए के राउत और अन्य, 2025)।

○ प्रणालियों के सामंजस्य में संस्थागत, सांस्कृतिक और ज्ञानमीमांसीय बाधाएँ

समकालीन उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण में महत्वपूर्ण संस्थागत, सांस्कृतिक और ज्ञानमीमांसीय बाधाएँ हैं जो सामंजस्य प्रयासों में रुकावट डालती हैं। संस्थागत ढाँचे अक्सर पश्चिमी शिक्षण मॉडलों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे इसके अंतर्निहित समग्र, नैतिक और आध्यात्मिक आयामों की उपेक्षा होती है, जो ऐतिहासिक रूप से भारतीय शिक्षा का आधार रहे हैं (अमित एस नानवानी और अन्य, 2024)। इसके अतिरिक्त, ज्ञान की सांस्कृतिक धारणाएँ विभाजन पैदा कर सकती हैं, औपनिवेशिक शिक्षा प्रणालियों की विरासत स्वदेशी ज्ञान के प्रति संदेह को बढ़ावा देती है, जिससे अकादमिक विमर्श में इसका महत्व कम हो जाता है (कुमार ए, 2025)। ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से, अनुभवजन्य और न्यूनीकरणवादी पद्धतियों का प्रभुत्व विविध ज्ञान ढाँचों के समावेश को सीमित करता है, इस प्रकार आधुनिक शैक्षिक प्रतिमान के भीतर भारतीय ज्ञान प्रणाली की वैधता को चुनौती देता है। स्थानीय और वैश्विक ज्ञान परंपराओं की समृद्धि को मान्यता देने वाले शिक्षा के प्रति अधिक समावेशी और एकीकृत दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए इन बाधाओं का समाधान करना अनिवार्य है।

निष्कर्ष

विश्लेषण से पता चलता है कि, समकालीन उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण अवसरों और चुनौतियों दोनों को प्रस्तुत करता है, जिन पर सावधानीपूर्वक चिंतन करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी ढांचा प्रस्तुत करती है, जिसे इसकी समृद्धि पर जोर देकर शैक्षिक परिदृश्य को बेहतर बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो ऐतिहासिक रूप से पश्चिमी प्रतिमानों से उपेक्षित रही है। इसको अपनाकर, शैक्षणिक संस्थान एक अधिक समग्र दृष्टिकोण को बढ़ावा दे सकते हैं जो स्थानीय परंपराओं का सम्मान करते हुए अकादमिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करता है। हालांकि, पाठ्यक्रम के विऔपनिवेशीकरण और अंतःविषयक शिक्षण वातावरण की आवश्यकता सहित अंतर्निहित चुनौतियों का समाधान करना महत्वपूर्ण है। जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति से संबंधित चर्चाओं में उल्लेख किया गया है, एक सुव्यवस्थित कार्यान्वयन योजना एक स्थायी शिक्षा प्रणाली के निर्माण के लिए आवश्यक है जो राष्ट्रीय पहचान और वैश्विक सहयोग दोनों को पोषित करती है। अंततः, उच्च शिक्षा में इसका सफल एकीकरण सभी छात्रों के लिए अधिक समावेशी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शिक्षण अनुभव को सुगम बना सकता है (शर्मा आर और अन्य, 2025) (ए के राउत और अन्य, 2025)।

उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान को एकीकृत करने की भावी संभावनाएं और निहितार्थ

उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण अकादमिक परिदृश्य को समृद्ध करने और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को बढ़ाने का एक परिवर्तनकारी अवसर प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, संस्थान एक ऐसा पाठ्यक्रम तैयार कर सकते हैं जो न केवल भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत को प्रदर्शित करे बल्कि अंतःविषयक सहयोग को भी बढ़ावा दे। पारंपरिक ज्ञान और समकालीन अकादमिक पद्धतियों का यह मिश्रण अनुसंधान पद्धतियों और शिक्षण दृष्टिकोणों को गहराई से प्रभावित कर सकता है, जिससे अधिक ठोस और प्रासंगिक शोध का निर्माण होगा। इसके अलावा, जैसा कि शर्मा आर और अन्य (2025) ने बताया है, भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण शिक्षा के विऔपनिवेशीकरण को सुगम बनाता है और समावेशिता को प्रोत्साहित करता है, जिससे उच्च शिक्षा अधिक सुलभ और विविध सामाजिक आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करने वाली बन जाती है। कुमार ए (2025) ने विभिन्न क्षेत्रों में नई जांचों का मार्गदर्शन करने में भारतीय ज्ञान प्रणाली की निरंतर प्रासंगिकता पर जोर दिया है, जो अंततः भारतीय विश्वविद्यालयों को राष्ट्रीय पहचान और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देते हुए वैश्विक ज्ञान अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में स्थापित कर सकता है।

सन्दर्भ

शर्मा, र., एवं वंगुरी, र. (2025). रिविटालाईजिंग हायर एजुकेशन थ्रू इंडियन नॉलेज सिस्टम (आईकेएस) : ए विज़न फॉर एनईपी 2020. https://www.semanticscholar.org/paper/a7c219f5efe09aa6bc223149e32c06505a5c8bb6

राउत, अ. क., एवं साहू, ल. (2025). इन्टीग्रेटिंग इंडियन नॉलेज सिस्टम इनटू कंटेम्पररी एजुकेशन : ए क्रिटिकल रिव्यु ऑफ़ दी नेशनल एजुकेशन पालिसी (एनईपी) 2020. https://www.semanticscholar.org/paper/df09f8f288ba915e66ba7c60c226c54629c6ce6f

नाइक, स. अ., सिंह, ज., एवं धर्माधिकारी, प. प. (2020). हायर एजुकेशन इन इंडिया : रेट्रोस्पेक्ट एंड प्रोस्पेक्ट. https://www.joshibedekar.org/monograph/Monograph%20-%20Higher%20Education%20in%20India14.08.2020.....pdf

सिंह, स. क. (2019). क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ़ हायर एजुकेशन इन इंडिया : चैलेंजेस एंड सजेसंस. http://www.researchdirections.org/Management/articleupload/EOI_10.11229_researchdirections_Apr19_5.pdf

कुमार, अ. (2025). इंटीग्रेटिंग दी लीगंसी ऑफ़ इंडियन नॉलेज सिस्टम विथ मॉडर्न एजुकेशन : ब्रिजिंग ट्रेडिशन एंड इनोवेशन. https://www.semanticscholar.org/paper/a1a0af2ac001ed09f37402226b40a2598593d326

ननवानी, अ. स., एवं ननवानी, न. (2024). इंडियन नॉलेज सिस्टम *(आईकेएस) : इम्पोर्टेंस इन इंडियन एजुकेशनल सिस्टम इन थे कॉन्टेक्स्ट ऑफ़ मॉडर्न एरा.* https://www.semanticscholar.org/paper/56b89d3a6d1b0c3eda64de36ac9e80253c2bc1c4

यादव, प., एवं पाटिल, क. (2025). रोल ऑफ़ करिकुलम इन इंटीग्रेटिंग *आईकेएस थ्रू एनईपी 2020 : चैलेंजेस एंड सलूशनस.* https://www.semanticscholar.org/paper/4b866d91bf41b7a651ee8a0ba190c143333b74bf

राजपूत, प. स., सिंह, र., जोशी, क., एवं चारी, स. न. (2025). एक्सप्लोरिंग दी इंडियन नॉलेज सिस्टम इन दी कॉन्टेक्स्ट ऑफ़ एनईपी 2020 : ए सर्वे बेस्ड स्टडी. https://www.researchgate.net/publication/390413662

शाह, ग. ब. (2026). मेनस्ट्रीमिंग इंडियन नॉलेज सिस्टम इन हायर एजुकेशन : ट्रांसफार्मेटिव पर्सपेक्टिवस अंडर एनईपी *2020.* https://zenodo.org/records/18524138

थापलियाल, प. (2023). इंडियन नॉलेज सिस्टम इन दी करिकुलम ऑफ़ *हायर एजुकेशन : ए प्रपोस्ड मॉडल ऑफ़ ए पीजी कोर्स इन आईकेएस.* https://www.researchgate.net/publication/372937255

त्रिपाठी, अ. ब., मिश्रा, स., एवं पात्रो, प. (2024).इंटीग्रेटिंग ट्रेडिशनल इंडियन नॉलेज सिस्टम इन हायर एजुकेशन (एनईपी 2020 पर्सपेक्टिवस*).* https://rjpn.org/ijcspub/viewpaperforall.php?paper=IJCSP24C1037

स्वैन, ब. च., एवं पांडेय, प. (2025). एपिस्तेमोलोजिकल *शिफ्ट्स इन इंडियन हायर एजुकेशन : इम्प्लिकेसोंस ऑफ़ एनईपी 2020.* https://archives.publishing.org.in/index.php/archives/article/view/1399

दास, स. स., एवं बिस्वास, र. (2025). नॉलेज रीमैजिन : एपिस्तेमोलोजिकल रीओरिएंटेसन अंडर एनईपी *2020.* https://archives.publishing.org.in/index.php/archives/article/view/1425

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). नेशनल एजुकेशन पालिसी *2020.* https://www.education.gov.in/national-education-policy-2020-0

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). (2023). गाइडलाइन्स फॉर इन्कोर्पोरटिंग इंडियन नॉलेज सिस्टम *(IKS) इन हायर एजुकेशन करिकुला.* https://www.ugc.gov.in

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). (2021). अकादमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट्स रेगुलेशनस.

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). (2022). करिकुलम एंड क्रेडिट फ्रेमवर्क फॉर अंडरग्रेजुएट प्रोग्राम *(FYUGP).*

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2024).एनईपी *2020 इम्प्लीमेंटेशन : रेगुलेशन एंड फ्रेमवर्क्स.*

भारत सरकार. (2024). इंडियन नॉलेज सिस्टम (IKS) फ्रेमवर्क एंड कोर्स इंटीग्रेशन गाइडलाइन्स.

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL